विचार बिन्दु

अगर इंसान सुख-दुःख की चिंताओं से ऊपर उठ जाये तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाये। –शेख सादी

युवाओं में फैलता शराब के नशे का मकड़जाल

नशाखोरी इस सदी की सबसे बड़ी समस्या है जिसमें शराब का नशा प्रमुख है। आज युवा वर्ग शराब के नशे में खोता जा रहा है। शराब जैसे तन मन और परिवार को खोखला करने वाली की लत उन्हें बर्बाद कर रही है। शुरू में युवा शौक के तौर पर शराब का सेवन करता है और बाद में नशे की मांग पूरी करने के लिए तस्करी और गैर सामाजिक कार्य के कारोबार में फंस जाता है।

आजकल के बदलते लाइफस्टाइल में हमारे देश में नशा एक ऐसा अभिशाप बन कर उभर रहा है जो हमारे युवाओं को तेजी से अपनी गिरफ्त में लेता जा रहा है। साल-दर-साल इन युवाओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। युवाओं में शराब जैसे खतरनाक नशे के बढ़ते चलन के पीछे बदलती जीवनशैली, अकेलापन, बेरोज़गारी और आपसी कलह जैसे अनेक कारण हो सकते हैं।

युवाओं में तेजी से बढ़ रही शराब की लत को लेकर स्वास्थ्य विशेषज्ञ समय-समय सचेत करते रहते हैं। शराब का सेवन शरीर को गंभीर क्षति पहुंचा सकता है। युवाओं के बीच शराब का सेवन एक चलन सा चल पड़ा है। शराब एक नशीला पदार्थ है, जिसको एक प्रकार का अवसाद भी माना जाता है।

शोध पत्रिका 'लांसेट' में प्रकाशित एक वैश्विक अध्ययन में यह खुलासा किया गया है कि युवाओं को ज्यादा उम्र वालों की तुलना में शराब के सेवन से अधिक स्वास्थ्य जोखिम का सामना करना पड़ता है। भौगोलिक क्षेत्र, आयु, लिंग और वर्ष के आधार पर शराब से जुड़े जोखिम के बारे में यह पहला अध्ययन है जिसमें कहा गया है कि दुनिया भर में शराब की खपत की सिफारिशें उम्र और स्थान पर आधारित होनी चाहिए। इसमें सबसे सख्त दिशा-निर्देश 15-39 साल के आयु वर्ग के पुरुषों के लिए लक्षित हों। शोधकर्ताओं ने 204 देशों में शराब के सेवन के अनुमानों के आधार पर गणना की है कि 2020 में 1.34 अरब लोगों ने हानिकारक मात्रा में इसका सेवन किया। अध्ययन में पाया गया कि 15 से 39 साल की उम्र के लोगों को शराब पीने पर ज्यादा खतरा होता है। 2020 में बहुत ज्यादा मात्रा में अल्कोहल लेने वालों में 59.1 प्रतिशत लोग 15 से 39 साल की उम्र वाले थे। इनमें से 76.7 प्रतिशत पुरुष थे।

हमारे समाज में नशे को सदा बुराइयों का प्रतीक माना और स्वीकार किया गया है। इनमें सर्वाधिक प्रचलन शराब का है। शराब सभी प्रकार की बुराइयों की जड़ है। शराब के सेवन से मानव के विवेक के साथ सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है। वह अपने हित-अहित और भले-बुरे का अन्तर नहीं समझ पाता। शराब के सेवन से मनुष्य के शरीर और बुद्धि के साथ-साथ आत्मा का भी नाश हो जाता है। शराबी अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। अमीर से गरीब और बच्चे से बुजुर्ग तक इस लत के शिकार हो रहे हैं।

आजादी के बाद देश में शराब की खपत 60 से 80 गुना अधिक बढ़ी है। यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं।

एक सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार भारत में पांच में से एक शख्स शराब पीता है। सर्वे के अनुसार 19 प्रतिशत लोगों को शराब की लत है। जबकि 2.9 करोड़ लोगों की तुलना में 10-75 उम्र के 2.7 प्रतिशत लोगों को हर रोज ज्यादा नहीं तो कम से कम एक पेग जरूर चाहिए होता है और ये शराब के लती होते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार देशभर में 10 से 75 साल की आयु वर्ग के 14.6 प्रतिशत यानी करीब 16 करोड़ लोग शराब पीते हैं।

छत्तीसगढ़, त्रिपुरा, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश और गोवा में शराब का सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है।

इस सर्वे की चौंकाने वाली बात यह है कि देश में 10 साल के बच्चे भी नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों में शामिल हैं। सर्वेक्षण में यह भी पता चला है कि शराब पर निर्भर लोगों में से 38 में से एक ने किसी न किसी बीमारी की सूचना दी, जबकि 180 में से एक ने रोगी के तौर पर या अस्पताल में भर्ती होने की जानकारी दी।

एक अन्य सर्वे के मुताबिक भारत में गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले लगभग 37 प्रतिशत लोग नशे का सेवन करते हैं। इनमें ऐसे लोग भी शामिल है जिनके घरों में दो जून रोटी भी सुलभ नहीं है।

जिन परिवारों के पास रोटी-कपड़ा और मकान की सुविधा उपलब्ध नहीं है तथा सुबह-शाम के खाने के लाले पड़े हुए हैं उनके मुखिया मजदूरी के रूप में जो कमा कर लाते हैं वे शराब पर फूंक डालते हैं। इन लोगों को अपने परिवार की चिन्ता नहीं है कि उनके पेट खाली हैं और बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं। ऐसे लोगों की संख्या भी लगातार बढ़ती जा रही है। ये लोग कहते हैं वे गम को भुलाने के लिए नशे का सेवन करते हैं। उनका यह तर्क कितना बेमानी है जब यह देखा जाता है कि उनका परिवार भूखे ही सो रहा है। युवाओं में नशा करने की बढ़ती प्रवृत्ति के चलते शहरी और ग्रामीण अंचल में आपराधिक वारदातों में काफी इजाफा हो रहा है। शराब के साथ नशे की दवाओं का उपयोग कर युवा वर्ग आपराधिक वारदातों को सहजता के साथ अंजाम देने लगे हैं। हिंसा, बलात्कार, चोरी, आत्महत्या आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है। शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए एक्सीडेंट करना, शादीशुदा व्यक्तियों द्वारा नशे में अपनी पत्नी से मारपीट करना आम बात है।

आजादी के बाद देश में शराब की खपत 60 से 80 गुना अधिक बढ़ी है। यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बडे राजस्व की प्राप्ति होती है। मगर इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक ढांचा क्षत-विक्षत हो रहा है और परिवार के परिवार खत्म होते जा रहे हैं। हम विनाश की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। देश में शराब बंदी के लिए कई बार आंदोलन हुआ, मगर सामाजिक, राजनीतिक चेतना के अभाव में इसे सफलता नहीं मिली। सरकार को राजस्व प्राप्ति का यह मोह त्यागना होगा तभी समाज और देश मजबूत होगा और हम इस आसुरी प्रवृत्ति के सेवन से दूर होंगे।

-बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

राशिफल शनिवार 6 अगस्त, 2022

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, विशाखा नक्षत्र सांय 5:51 तक, शुक्ल योग दिन 12:41 तक, बालव करण दिन 3:04 तक, चन्द्रमा दिन 12:06 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मेष, बुध-सिंह, गुरू-मीन, शुक्र-मिथुन, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रवियोग सांय 5:51 से आरम्भ होगा। आज श्री हरि जयन्ती, अश्वत्थ मारूती पूजा है। शुक्र कर्क राशि में रविवार प्रात: 5:20 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:36 से 9:15 तक, चर 12:33 से 2:11 तक, लाभ-अमृत 2:11 से 5:29 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 7:08

मेष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है और बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

सिंह
मित्रों/परिजनों से चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। परिजनों के सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-परिवार कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और अनावश्यक धन खर्च होगा।

धनु
अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा और विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। दिन के मध्यान्ह परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी और कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

कर्क
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
घर-परिवार कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनावश्यक समय खराब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी और मन:स्थिति में सुधार होगा।

मीन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

अभेद्य दीवारों से रक्षित चूरू का किला

चूरू किले का निर्माण चूरू के ठाकुर कुशलसिंह ने सन् 1694 में करवाया। उन्होंने नगरवासियों को सुरक्षा प्रदान करने एवं आत्मरक्षा के उद्देश्य से इस क़िले का निर्माण कराया। किले का निर्माण होते ही लोगों का कुशलसिंह में विश्वास बढा और बड़ी संख्या में लोग आकर चूरू में बसने लगे। कहा जाता है कि किला बन जाने से नगर के विकास एवं व्यापार का मार्ग प्रशस्त हुआ और चूरु तरक्की करने लगा।

चूरू के मुख्य बाजार में स्थित इस किले का परकोटा बहुत मजबूत बना है। यह किला नौ बुर्जों में विभक्त है। किले का सिंहद्वार पश्चिमाभिमुख है। किले की दीवारें अत्यंत मजबूत, चौड़ी और ऊंची हैं। सिंहद्वार के दरवाजे लोहे की मोटी सलाखों से जुड़े हैं। दरवाजे को भेदना अत्यंत दुष्कर कार्य था। किले की प्राचीर में अनेकों सुराख हैं जहां से शत्रुओं पर बंदूकें दागी जाती थी। सिंहद्वार के दक्षिण के एक बुर्ज में सन् 1870 ईस्वी का एक पट्ट लगा है। किले के एक भाग में मेहता मेघराज की देवली, एक पुराना कुआं और गोपीनाथ जी का भव्य मंदिर है।

■ आजादी की रक्षा के लिए इस किले से दुश्मन की सेना पर चांदी के गोले दागे गए

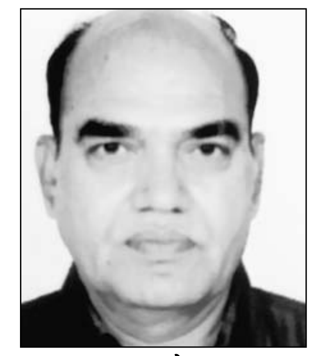

पन्नालाल मेघवाल

चूरु के किले में ठाकुर शिवसिंह द्वारा बनाया गया भव्य गोपीनाथ का मंदिर है। इस मंदिर में राधा-कृष्ण के साथ-साथ शिव-पार्वती गणेश-कार्तिकेय, हनुमानजी एवं दुर्गा की मूर्तियां स्थापित की गई हैं। किले में भगवानदास बावला ने सन् 1895 में एक अस्पताल बनवाया था । किले के दक्षिणी-पूर्वी भाग में ठाकुरों के महल और कचहरी थी। चूरू का तहसील मुख्यालय भी वर्षों तक यहां रहा। नगरपालिका का कार्यालय भी अनेक वर्षों तक यहीं से संचालित हुआ। यहां पर एक बालिका विद्यालय संचालित है। बालिका स्कूल के पास ही जेल और प्रहरियों के क्वार्टर बने थे उन्हें अन्यत्र स्थानांतरित किया गया है। किले के दक्षिण में बने एक भवन में वर्षों स्वास्थ्य विभाग का दफ्तर रहा। बाद में दूरदर्शन रिले केंद्र भी स्थापित हुआ। इस भवन में मातृ शिशु कल्याण केंद्र संचालित रहा। किले के पुराने कुएं से किले और आस-पास के लोगों की जलापूर्ति की जाती है।

इतिहासकार गोविंद अग्रवाल द्वारा लिखित चूरू मंडल का शोधपूर्ण इतिहास के अनुसार यह किला अनेक लड़ाइयों का साक्षी रहा है। इस किले को तोप के गोले भी नहीं भेद पाए।

ठाकुर कुशलसिंह के वंशज ठाकुर शिवसिंह शूरवीर और स्वाभिमानी थे। बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह से उनकी कभी नहीं बनी। महाराजा सूरतसिंह ठाकुर शिवसिंह से नाराज रहते थे। उन्होंने शिवसिंह को सबक सिखाने एवं किला अपने अधीन करने के लिए अनेक बार चूरू पर आक्रमण किए। सन् 1814 में बीकानेर नरेश ने अमरचंद सुराणा को भारी सैन्य बल के साथ चूरू पर आक्रमण के लिए भेजा। बीकानेर की सेना ने चूरू के किले को चारों तरफ से घेर लिया। दोनों तरफ से तोपें दागी गई। ऐसे में ठाकुर शिवसिंह के पास गोला-बारूद खत्म हो गया।

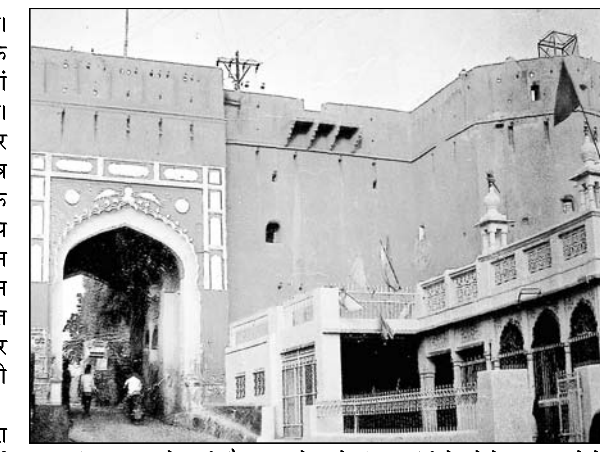

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जब गोला-बारूद समाप्त हो गया तो अपनी आजादी की रक्षा के लिए चूरू के इस किले से दुश्मन की सेना पर चांदी के गोले दागे गए। चूरू के लोगों द्वारा दी गई चांदी से गोले बनाए गए थे। विश्व के इतिहास में अपनी आजादी की रक्षा के लिए चांदी के गोले बनाकर तोपों से दागने की ऐतिहासिक घटना स्वर्णाक्षरों में अंकित की गई। इसी कारण चूरू के किले का नाम अमर हो गया।

आजादी के बाद धीरे-धीरे किले की स्थिति जर्जर हो गई। राज्य सरकार ने इस किले का जीर्णोद्धार करवाकर इसका सौन्दर्यीकरण किया जिससे यह किला पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

–पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

बीएसएफ बटालियन ने हर घर तिरंगा रैली निकाली

पोकरण में बीएसएफ के जवानों ने तिरंगा रैली निकाली।

पोकरण, (निसं)। स्वतंत्रता दिवस के 75वे आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत देशभर में चलाए जा रहे घर-घर तिरंगा अभियान के तहत शुक्रवार सुबह सीमा सुरक्षा बल 87 वीं बटालियन की ओर से परमाणु नगरी पोकरण में तिरंगा रैली का भव्य आयोजन किया गया।

सीमा सुरक्षा बटालियन के समादेष्टा रणवीरसिंह ने बताया कि अमृत महोत्सव के अंतर्गत आगामी 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा लगाने के अभियान का आगाज किया गया, सीमा सुरक्षा बल के जवानों की ओर से कस्बे में रैली निकालकर जनजागरण किया गया। कार्यक्रम के तहत तिरंगा रैली शहर के रेड फोर्ट से हरी झण्डी दिखा कर रवाना हुई जो शहर के गांधी चौक, फोर्ट रोड, सुभाष चौक, स्टेशन रोड, नगर पालिका के आगे से होते हुए,जयनारायण व्यास सर्किल, अंबेडकर सर्किल से होते हुए गुरुद्वारा तक पहुंची।

इस दौरान बीएसएफ के जवानों की ओर से शहर के राष्ट्रीय स्मारकों पर तिरंगा फहराया गया। सीओ ने अपने उद्बोधन में कहा कि शहर में लोगों को राष्ट्रीय भावना जगाने व राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा वितरित किया गया। इस दौरान बडी संख्या में बीएसएफ के वीर जवान इस रैली में शामिल हुए। इस दौरान बीएसएफ के अधिकारी सहित जवानों व स्कूली छात्रों ने ऊंटों और वाहनों पर सवार होकर तिरंगा रैली में भाग लिया। जवानों की ओर से आमजनों को अपने-अपने घरों में तिरंगे को लगाने का आव्हान किया गया। इस यात्रा को लेकर कमांडेंट रणबीर सिंह ने आमजनों से अपील की कि अपने अपने घरों, मकान, स्कूल सार्वजनिक स्थलो में ज्यादा से ज्यादा झंडे लगाएं।

■ जवानों की ओर से आमजनों को अपने-अपने घरों में तिरंगे को लगाने का आव्हान किया गया

कीचड़ के बीच होकर विद्यालय तक पहुंचने को मजबूर हैं छात्र

रेवदर के निकट डाक से गोंडाना गोलिया जाने वाले रास्ते पर कीचड़ से लोग को परेशान हैं।

रेवदर, (निसं)। रेवदर के निकट अनादरा पंचायत समिति के डाक ग्राम पंचायत मुख्यालय से महज 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रेबारियों के गोलिया ढाणी के लोगों को बारिश के दिनों में गुजरने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

रेबारियों के गोलिया में निवास करने वाले ग्रामीणों के आने व जाने हेतु एक मात्र यही रास्ता है। जिसका निर्माण नहीं होने से बारिश के दिनों में यह रास्ता दलदल में तब्दील हो जाता है। इतना ही बारिश के दिनों में रास्ते पर जगह-जगह कीचड़ फैल जाता है । गांव के लोगों ने जनप्रतिनिधियों सहित विभागीय अधिकारियों को भी अवगत करवाकर सड़क बनाने हेतु पुरजोर मांग की जा चुकी है लेकिन इस समस्या की और कोई ध्यान नही दे रहा है। स्कूल में पढ़ने हेतु आने वाले छात्रो का कहना है की हर वर्ष बारिश के समय में मार्ग पर कीचड भरी स्थिति रहती है। जिससे फिसलने लगते हैं। और गिरने की स्थित रेबारियों के गोलुओ ढाणी में लगभग 15० से अधिक घरों की आबादी होने के बावजूद भी प्रशासन की आँखे मूंद हुई हैं। ग्रामीणों ने बताया कि बारिश के कारण हर वर्ष इसी प्रकार परेशानीयों का सामना करना पडता है। सरपंच को कई बार अवगत करवाने के बावजूद भी कोई समाधान नहीं किया जा रहा है। इसको लेकर डाक सरपंच राधा देवी का कहना है की क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से बारिश का दौर लगातार जारी है जिससे ग्रेवल नही बना पा रहे हैं। लेकिन बारिश के रुकते ही ग्रेवल करवा दिया जाएगा।

सदा कोर : बहादुरी और मोह का विस्मृत इतिहास

बात 1798 के बाद की है जब अहमद शाह अब्दाली के पौत्र ने सिंधु पार बसे सिखों को पूरी तरह नेस्तनाबूद करने का बीड़ा उठाया और लाहौर को सिखों की भांगी मिस्ल जो कि इसके संस्थापक सरदार छज्जा सिंह के भांग के आदी होने के कारण भांगी मिस्ल कहलाई थी, से छीन लिया। अब उसका निशाना अमृतसर पहुंच कर सिख कौम को सदा के लिए नष्ट करना था।

जब सिखों के सरबत खालसा में युवा रणजीत सिंह के अलावा बाकी सब मिस्लों के सरदारों ने चुप्पी साध ली तो एक महिला गरज के बोली कि ये मर्दों के लिबास हमें दे कर जनाना कपड़े पहन लो क्योंकि हम सरदारनियां अफगानों से युद्ध करने जाएंगी। इस पर सारे सरदार रणजीत सिंह के नेतृत्व में अफगानों से युद्ध को तैयार हुए। हालांकि फुलकियां मिस्ल के साहिब सिंह, कांगड़ा के राजा संसार चंद और कसूर के नवाब ने अफगानों का साथ दिया पर आखिरी जीत सिखों की हुई जिसके बाद युवा रणजीत की धाक पूरे पंजाब में फैल गई। सरबत खालसा में जो औरत गरजी थी वह युवा रणजीत सिंह की सास और कन्हैया मिस्ल की नेता सदा कोर थी।

सदा कोर चूंकि एक महिला थी इसलिए पुरुष प्रधान समाज में उसे उतनी पहचान नहीं मिली जिसकी वह हकदार थी। अब्दाली के मरते ही सिख आपस में वर्चस्व की लड़ाई लड़ने लगे। उस समय के पंजाब में जत्थों को मिस्ल कहा जाता था जिनमें भांगी, कन्हैया, रामगढ़िया आदि शक्तिशाली मिसलें हुआ करती थी। कान्हा गांव की कन्हैया मिस्ल के संस्थापक सरदार जयसिंह ने अपनी महत्वाकांक्षा के चलते भांगी और रामगढ़िया मिस्ल के साथ -साथ कांगड़ा के राजा संसार चंद को अपने आधीन करने के लिए एक नई उभरती सुक्करचक गांव से उठी सुक्करचकिया के सरदार चरत सिंह का साथ लिया। युद्ध में चरत सिंह की मृत्यु होने पर उसके पुत्र महासिंह को सरदार नियुक्त किया गया, जयसिंह इस युवक का शिक्षक और संरक्षक बना।

आगे चलकर जम्मू के राजा ने अपनी रियासत को भांगियों से मुक्त करवाने के लिए जयसिंह एवम् महासिंह का साथ मांगा। यहां पर महासिंह लालच में आ गया और उसने अकेले ही जम्मू पर हमला कर शहर को लूट लिया। इस वादा खिलाफी से नाराज जयसिंह ने उससे संबंध तोड़ लिए। कड़वे होते जा रहे संबंधों के दौर में महासिंह ने रामगढिया मिस्ल के जस्सा सिंह और कांगड़ा के राजा संसार चंद से मिल कर अपने ही संरक्षक जयसिंह पर हमला कर उसके एक मात्र पुत्र गुरबक्श सिंह को मार डाला। इस सदमे के कुछ समय बाद जयसिंह भी चल बसे। अब इस बिखरती, कमजोर और नेतृत्वविहीन होती कन्हैया मिस्ल की सिरमौर बनी गुरबक्श सिंह की विधवा सदा कोर। हताशा के इस दौर में सदा कोर ने समझदारी से काम लेते हुए महासिंह के बेटे रणजीत सिंह से अपनी सुंदर और लंबी कद काठी की बेटी मेहताब कोर से सगाई करवा दी हालांकि बेटी अपने बाप के हत्यारे के बेटे से शादी नहीं करना चाहती थी।

डॉ रामावतार शर्मा

थोड़े समय बाद महासिंह बीमारी से चल बसे पर मृत्यु से पहले अपने युवा बेटे रणजीत सिंह की भांगियों पर विजय को देख लिया। विजय के बाद युवा रणजीत ने दीवान लखपत राय को राजकाज सौंप अपने आप को अय्याशी में झोंक दिया जिसके कारण उसकी मां राजकोर दुखी रहने लगी। मौका देख कर सदा कोर ने सगाई को विवाह में बदल दिया और रास्ते से भटकते रणजीत सिंह को अपनी छत्रछाया में ले लिया। कुछ ही समय में दीवान लखपत राय और राजमाता राज कोर की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। सदा कोर का युवक रणजीत पर पूर्णाधिकार हो गया पर समय को कुछ और ही मंजूर था क्योंकि मेहताब कौर मां नहीं बन पाई तो रणजीत सिंह ने दूसरी शादी कर ली। इस शादी से जब पुत्र खड़ग सिंह का जन्म हुआ तो निराश सदा कोर अपनी बेटी को लेकर वापस अपनी जागीर बटाला चली गई। सदा कोर के जीवन में फिर उमंग लौटी जब अफगानों ने एक बार फिर पंजाब की तरफ रुख किया। सदा कोर ने रणजीत सिंह के साथ लाहौर की तरफ कूच किया और दोनों ने चालाकी और जन सहयोग से बिना किसी खून खराबे के लाहौर पर कब्जा किया। युवा रणजीत सिंह के विभिन्न विजय अभियानों से कई सिख सरदार खुश नहीं थे। उन्होंने जब मिलकर उस पर हमला किया तो सदा कोर उसके साथ चट्टान की तरह खड़ी रही। उसके निर्देशन में ही रणजीत सिंह ने अमृतसर पर बिना लहू बहाए अधिकार किया। सदा कोर ने बुजुर्ग सिख सरदारों को मना कर रणजीत सिंह को महाराजा घोषित करवाया।

■ सदा कोर बहादुर, चतुर, राजनीतिक सूझबूझ और वार्तालाप द्वारा विजय पाने में माहिर थी

सदा कोर की जान अपनी इकलौती संतान मेहताब कौर में अटकी थी जो कि संतानहीन होने से अपना पद और राज शक्ति खो चुकी थी। सदा कोर ने दो नवजात शिशु खरीद कर प्रचारित किया कि ये रणजीत सिंह के बच्चे हैं। चतुर राजा ने बच्चों को स्वीकार तो कर लिया पर साहिबजादा का दर्जा देकर सबको बता दिया कि वह इनका बाप नहीं है। जब रणजीत सिंह ने एक मुस्लिम नर्तकी मोरान से शादी कर ली तो अपमानित मां बेटी ने अंग्रेजों से मिल कर उसे सत्ताच्युत्त करने का षडयंत्र रचा पर अंग्रेज भी एक पुरूष राजा पर ज्यादा विश्वास करते थे। सास और दामाद के बीच बड़ी खाई पड़ गई जब राजा ने राजकुमार खड़ग को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा से बचा हुआ रिश्ता भी टूट गया।

इतने मन मुटाव के बावजूद जब मालवा के आधिपत्य को लेकर अंग्रेजों और रणजीत सिंह के बीच युद्ध की स्थिति आई तो सदा कोर ने मध्यस्थता कर अमृतसर समझौता करवाया क्योंकि अंग्रेजों को हराना रणजीत सिंह के बस की बात नहीं थी। जब आत्मसम्मान खो चुकी मेहताब कौर की मृत्यु पर रणजीत सिंह नहीं आए तो सदा कोर ने राजा को हटाने के प्रयास फिर से तेज कर दिए। वह साठ की उम्र पार कर चुकी थी। रणजीत सिंह ने बटाला अपने अधिकार में लेकर उसकी देखभाल मेहताब के क्रय किए बच्चों को सौंप दी, सदा कोर को नजरबंद कर दिया गया। सदा कोर कब और कैसे मरी इसके बारे में कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। इतिहास हारे हुए पात्रों को याद नहीं रखता है पर लेखक सरबप्रीत सिंह जैसे लोग बीते समय काल में जाते हैं और गुम हुए इतिहास को वापस लाते हैं। सदा कोर बहादुर, चतुर , राजनीतिक सूझबूझ और वार्तालाप द्वारा विजय पाने में माहिर थी पर वह एक मां भी थी जो अपनी बेटी को अपमानित नहीं देखना चाहती थी। यही उसकी शक्ति थी और यही बड़ी कमजोरी।

डॉ रामावतार शर्मा,
चिकित्सक एवं लेखक